International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 3; Issue 2; March 2018; Page No. 1338-1340

बुंदेलखण्ड : नामकरण, भाषा, उपबोलियाँ

डॉ० गीतांजलि मिश्रा
हिन्दी अध्ययनशाला, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन, मध्य प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

बुंदेलखण्ड एक ऐसा प्रांत है जिसकी प्राचीनकाल से लेकर आज तक गौरवपूर्ण परम्परा रही है। किसी भी प्रांत की प्राचीनता हमें मालूम करना हो तो हम इतिहास द्वारा देख–समझ व जान सकते है। कई ऐसे विद्वान है, जिन्होंने शिलालेखों, ताम्रपत्रों एवं कई ऐतिहासिक तथ्यों के द्वारा इस प्रांत की प्राचीनतम जानकारी को एकत्र कर खोजा। इन्हीं का अनुसरण करते हुए कई विद्वानों ने अपनी पुस्तकों में इसको स्थान दिया एवं लोगों को इस प्रांत की प्राचीन परम्परा से अवगत कराया। इसी तरह हम किसी भी प्रांत की प्राचीनकाल से लेकर आज तक की सामाजिक स्थिति का पता लगा सकते हैं।

बुंदेलखण्ड नामकरण

किसी भी क्षेत्र के नामकरण को लेकर इतिहास साक्षी होता है। इसके अतिरिक्त ग्रन्थों, पुराणों, शिलालेखों के माध्यम से हमें उस क्षेत्र की जानकारी मिलती है। कई विद्वानों ने बुंदेलखण्ड के नामकरण के बारे में अपने अपने तर्क प्रस्तुत किये।

बी.ए. स्मिथ ने माना कि

"आधुनिक बुंदेलखण्ड से उस सम्पूर्ण क्षेत्र का बोध होता है, जिसमें चंदेल शासकों ने राज किया था।"[1]

इस तरह बी.ए. स्मिथ ने चंदेल शासकों का राज्य होने के कारण ही इस क्षेत्र का नाम बुंदेलखण्ड पड़ना स्वीकार किया। नामकरण जानने की प्रक्रिया में विभिन्न मान्यताओं में डॉ. कृष्णलाल हंस की मान्यता भी अपना विशेष स्थान रखती है– "गिरीराज विंध्य की उपत्यका में स्थित होने के कारण ये भू–भाग बुंदेलखण्ड कहलाता है, जैसा कि हिमालय की गोद में स्थित आज का 'हिमाचल प्रदेश' है।"[2]

विंध्य प्रदेश में वर्तमान 'बुंदेलखण्ड' का पूर्वी भाग सम्मिलित था। यह भू–भाग प्रागैतिहासिक काल से लेकर वर्तमान युग में भी अपने अस्तित्व में रहा है, किन्तु इसका वर्तमान नाम प्रागैतिहासिक काल अथवा उसके पश्चात् के किसी प्राचीन ऐतिहासिक काल की देन नहीं है, शब्द 'बुंदेलखण्ड' से स्पष्ट है कि भारत का वह भू–भाग, जो प्रमुख रूप से बुंदेले राजपूतों की निवास भूमि रहा है। अतः निश्चित ही हम यह मान सकते हैं कि इस भूखण्ड का वर्तमान प्रचलित नाम उस काल की ही देन होना चाहिये, जिस काल में वे इस भू–भाग के शासक बने।

पौराणिक आख्यानों के आधार पर यहाँ की देवी का नाम 'विंध्य' बताया गया है, 'शिव पुराण' में उल्लेखित है कि – 'विन्ध्य' ने तपस्या करके शिव के द्वारा वरदान माँगने के लिये कहे जाने पर 'विन्ध्य–देवी' ने 'शिव' से अपने निकट निवास करने का आग्रह किया। 'शिव' ने विंध्य की बात मानकर प्राणस्वरूप में 'ओंकारेश्वर' के रूप में तथा पार्थिव रूप में 'ऊकेश्वर' के रूप में अपने को प्रतिष्ठित किया। वहीं डॉ. गौरी शंकर द्विवेदी जी ने इसे और अधिक प्रामाणिक बताते हुये बुंदेल वैभव में लिखा– "चंदेलवंश में जैज्जाक या जयशक्ति बड़ा ही प्रतापी राजा हुआ। अतः कुल काल तक इस प्रदेश को 'जैजाकभुक्ति' भी माना गया।"[3]

जुझौति, जाजहोति, जिझांति आदि नाम इसके पर्याय माने गये। सुविख्यात उपन्यासकार डॉ. वृंदावन लाल वर्मा, सन् 1904 के लगभग मऊरानीपुर से 'जुझौति' नामक मासिक पत्रिका पत्र का प्रकाशन भी करते रहे।

सत्यकेतु विद्यालंकार मानते हैं कि – "दुर्गम पर्वत से युक्त विध्यांचल का यह प्रदेश उत्तर भारत को दक्षिण भारत से पृथक करता है। कृषि की दृष्टि से विध्यांचल का क्षेत्र उत्तर भारत के मैदान का मुकाबला नहीं कर सकता, पर जंगलों और खानों की दृष्टि से बहुत समृद्ध है।"[4] साहित्य मनीषीयों और विद्वानों ने इसके 'बुंदेलखण्ड' नाम को ही अधिक महत्त्व दिया व इसके साक्ष्य भी प्रस्तुत किये। एक मान्यतानुसार बुंदेले इस भू–भाग के मूल निवासी नहीं है, वरन् वे विंध्य कि उस उपत्यका में आकर बसने के पश्चात् ही बुंदेले कहलाये होंगे। जनश्रुति के अनुसार – "गहरवार क्षत्रिय कुलोत्पन्न हेमकरन भाइयों द्वारा अपनी काशी का राज्य छिन जाने पर इस भू–भाग में आये और उन्होंने पुनः अपना राज्य स्थापित करने के लिये 'विंध्यावासिनी देवी' की आराधना की। उन्होंने देवी को अपना सिर अर्पित करने के लिये जैसे ही तलवार उठाई, देवी ने उनका हाथ पकड़ लिया, किन्तु उनके मस्तक पर खरोंच लग गई और रक्त की पाँच बूँदे भूमि देवी के समक्ष जा गिरी।"[5] इसी कारण उनका नाम 'हेमकरन पंचम' रखा गया। यह कथन भी सत्य के निकट प्रतीत होता है, क्योंकि बूँद से बूँद और फिर 'बुंदेला' शब्द बनना कोई आश्चर्य की बात नहीं है और इस प्रकार 'हेमकरन' की संतान 'बुंदेले' कहलाये और कुछ समय बाद इनकी निवास भूमि 'बुंदेलखण्ड' के नाम से संबोधित होने लगी।

इस प्रकार कई स्थानों से प्राप्त अभिलेखों और विवरणों से यह निश्चित हो गया कि 'जेजाहुति' नाम चंदेल शासकों से नहीं, वरन् और भी अधिक पौराणिक नाम है। "जजाहुति के नाम की स्मृति में बुंदेलखण्ड में ब्राह्मणों और वैश्यों की एक जाति को 'जुझौतिया' नाम से भी पुकारा जाता है।"[6] अतः निष्कर्षतः यह माना जा सकता है कि कई वर्षों तक राज्य करने के कारण इस क्षेत्र का नामकरण 'बुंदेलखण्ड' पड़ना स्वाभाविक भी है और प्रचलित व प्रसिद्ध भी है।

बुंदेली भाषा एवं उसकी उपबोलियाँ

किसी भी क्षेत्र की बोली जो कि भाषा के रूप में समृद्धि पाती है, आधार और संक्रिया की दृष्टि से भाषा के दो पक्ष माने जा सकते हैं।

1. मानसिक
2. भौतिक

'मानसिक–पक्ष' भाषा की आत्मा है, तो 'भौतिक–पक्ष' भाषा का

शरीर है। यहाँ भाषा की आत्मा से आशय उन विचार, भावों से है, जिनकी अभिव्यक्ति के लिये वक्ता भाषा का प्रयोग करता है। भाषा के भौतिक पक्ष के सहारे श्रोता उनकी वाणी ग्रहण करता है।"[1] भौतिक पक्ष में भाषा में प्रयुक्त ध्वनियाँ वर्ग, स्वर विचारों, भावों को व्यक्त करता है जैसे– 'नैनूँ' के भाव को व्यक्त करने के लिये वक्ता (ने + ऐ + न् + उ) इन ध्वनियों का सहारा लेता है। अतः ये अर्थ वाहिका ध्वनियाँ 'भौतिक–पक्ष' मानी गई है। 'भौतिक–पक्ष' अभिव्यक्ति का साधन है व 'मानसिक–पक्ष' साध्य है। 'भौतिक–पक्ष' भाषा की शक्ति बढ़ाने के लिये बहुत अधिक महत्त्व रखता है, अतः 'भौतिक–पक्ष' भाषा का महत्त्वपूर्ण पक्ष है। 'भौतिक–पक्ष' की दृष्टि से बुंदेली भाषा एक समर्थ भाषा सिद्ध होती है। बुंदेली के वृहद् क्षेत्र में इसके हर अंचल में अपने स्थानीय रूप प्रचलित है।

कई विद्वानों ने बुंदेली भाषा के उद्भव के सम्बन्ध में अनेक मत प्रस्तुत किये। डॉ. धीरेन्द्र वर्मा के अनुसार – "बुंदेली को ब्रज का दक्षिणी रूप कहा जा सकता है। दोनों में अंतर शब्द रचना की अपेक्षा ध्वनियों में अधिक है। वास्तव में बुंदेली को हिन्दी की अलग बोली ना मानकर ब्रज की दक्षिणी उपबोली कहा जा सकता है।"[8]

विभिन्न विद्वानों ने अपने–अपने मतों से स्पष्ट किया है कि बुंदेली को किसी ने 'भाषा' कहा, किसी ने 'उपभाषा' या 'विभाषा' का नाम दिया तो किसी ने इसे बोली मात्र माना है। पहले 'बुंदेली' को बोली के रूप में स्वीकार किया गया था लेकिन बाद में इस बोली में साहित्य रचना होनी लगी जिस कारण से इसे भाषा स्वीकार किया गया।

भाषाविद् हिन्दी की लोकभाषाओं का उद्भव मध्यप्रदेश की शैरसेनी अपभ्रंश से मानते है, जबकि प्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉ. हरदेव बाहरी अपभ्रंश को आभीर, गुर्जर आदि जातियों की भाषा मानते हुये लिखते है– "प्राकृत के उत्तरवर्ती रूप से ही आधुनिक आर्य भाषाओं का उद्भव हुआ।"[9] इस तरह उन्होंने पश्चिमी हिन्दी का विकास उत्तर मध्यकालीन शौरसेनी प्राकृत से माना है और निर्माणकाल में उस पर आभीर, टक्क और पैशाची भाषा के प्रभाव को स्वीकार किया है। वहीं डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेजी कहते हैं कि – "इसी 'ग्राम्य' अपभ्रंश से ही नरमायी मिली, यमुना की झिलमिलाती यामिनी ने इसमें चमक पैदा की और टौंस ने हौंस बढ़ाया।"[10] विद्वानों के उल्लेख से यह तो सिद्ध होता है कि भाषा में सम्प्रेषणीयता का विशेष महत्त्व है। भाव सम्प्रेषण शब्दों के माध्यम से होता है। शब्दों का लालित्य उसे और अधिक सरल बना देता है। बुंदेली में यह सम्प्रेषण कुशल सामर्थ्य और सरसता दोनों ही प्राप्त होती है। इसकी शब्द संपदा, कहावतें, मुहावरे, लोकोक्तियाँ पर्याप्त मात्रा में समुपलब्ध होती है। इसमें अभिधा है, लक्षणा है और व्यंजना भी है। शब्दावली रूप योगरूढ़ आदि विशेषताओं से संयुक्त है। इस प्रकार विध्यांचल श्रेणियों से घिरे हुये ये भाग काव्य और साहित्य में अग्रणीय हो अपनी एक विशेष पहचान बनाते है। इस तरह हम देख सकते हैं कि किसी भी बोली का रूप जब साहित्य ले लेता है तो उस बोली को विशिष्ट भाषा का दर्जा मिल जाता है और उसकी अपनी एक अलग व विशिष्ट स्वतंत्र पहचान बनती है।

बुंदेली उपबोलियाँ

बुंदेली की भी कई उपबोलियाँ है। बुंदेलखण्ड के भू–भाग में बोलियों की विभिन्नता देखी गयी। "जातीय संगठन के आधार पर बुंदेली की उपभाषाओं के निम्न भेद प्राप्त होते है–

1. बनाफरी – बांदा और उसके आसपास बोली जाती है।
2. निमहा – केन नदी के दोनों किनारों पर बोली जाती है।
3. कुणडी – बांदा तथा केन नदी के आसपास की बस्तियों में प्रचलित है।
4. तिरहारी – हमीरपुर में यमुना नदी के दक्षिणी किनारे से होकर जालौन तक चली जाती है।
5. खटोला – पन्ना की ओर बोली जाती है।
6. लुधयांती चरखारी – सरीला जिगनी (राठ तहसील) में।
7. तबरधारी – जिला मुरैना की अम्बाह तहसील तथा आसपास, ग्वालियर जिले के ग्वालियर तथा डाबरा तहसील।
8. भदादरी – ग्वालियर दतिया तथा भिण्ड जिले व निकटवर्ती क्षेत्रों में शिवपुरी में मेहरौनी, नरवर तहसील के ग्रामों में।
9. जटवारी – 'भिण्ड' जिले के गोहद तहसील अंतर्गत।
10. सिकरवारी – मुरैना की मुरैना, जौरा, सबलगढ़ तहसीलों में।
11. जादौमारी – श्योपुर, विजपुर तहसील के तथा पालपुर (मुरैना तहसील)में।
12. पवारी – ग्वालियर के उत्तर पूर्व की ओर दतिया, झाँसी के आसपास के क्षेत्र।[11]

'बुंदेलखण्ड' की बोली को ही 'बुंदेली' नाम दिया गया। ऐसे कई साक्ष्य प्राप्त होते हैं। बाद में इसका क्षेत्र विस्तृत हो गया और उसमें साहित्यिक रचनायें होने लगी। तब इसने बोली से भाषा का रूप प्राप्त किया।

जातीय आधार पर बुंदेली की उपबोलियाँ

जातीय आधार पर बुंदेली के निम्न भेद किये जा सकते है–

1. बनाफरी – बांदा और उसके आसपास बोली जाती है।
2. निमहा – केन नदी के दोनों किनारों पर बोली जाती है।
3. तिरहारी – हमीरपुर में यमुना नदी के दक्षिणी किनारे से लेकर जालौन तक चली जाती है।
4. लुधयांती – राठ, चरखारी, सरीला, सिगनी में।
5. तबरधारी – जिला मुरैना अम्बाह तहसील में ग्वालियर जिले के ग्वालियर तहसील तथा डाबरा तहसीलों तक, दतिया तथा भिण्ड जिले में व निकटवर्ती क्षेत्रों में, शिवपुरी में मेहरौनी, नरवर तहसील के ग्रामों में भटावरी बोली जाती है।
6. पवारी – ग्वालियर के उत्तर पूर्व की ओर दतिया और झाँसी के आसपास का क्षेत्र पवारी है। अतः स्पष्टतः हम कह सकते हैं कि एक ही जिले के अंतर्गत बोली में विभेद पाये जाते हैं।

डॉ. मनु जी श्रीवास्तव ने अपनी पुस्तक 'बुंदेली काव्यधारा' में बुंदेली की विशेषताओं को स्पष्ट करते हुये लिखा है – "खड़ी बोली में जहाँ 'अकारांत' तथा ब्रज में 'औकारांत' प्रयुक्त होते हैं वहीं बुंदेली 'आंकरांत' भाषा है।"

खड़ी बोली – मीठा, तुम्हारा, चिकना
ब्रज – मीठी, तुम्हारी, चिकनी
बुंदेली – मीठों, तुमाओ, चिकनों।"[12]

'बुंदेली' का विकास शैरसेनी अपभ्रंश से माना जाता है। बुंदेली में लोकसाहित्य काफी है। जिसमें 'इसुरी की फागें' बहुत प्रसिद्ध है। यह कहा जाता है कि हिन्दी प्रदेश की प्रसिद्ध लोककथा 'आल्हा' जिसे हिन्दी साहित्य में भी स्थान मिला है, मूलतः बुंदेली की ही एक उपबोली 'बनाफरी' में रचित ग्रंथ है। इसकी उपबोलियाँ राठौरी, लौधान्ती, भदावरी आदि प्रचलन में है।

बुंदेलखण्ड इसके नामकरण एवं 'बुंदेली' की बोली से भाषा के रूप ग्रहण करने की यात्रा काफी प्रसिद्ध लगती है, वहीं नामकरण के ऐसे साक्ष्य भी प्राप्त होते है जिनसे इसके नामकरण में प्राचीनकाल से लेकर आज तक की गाथा गौरवपूर्ण परम्परा का बखान करती है। अतः निष्कर्षतः हम कह सकते है कि बोली का भाषा में परिवर्तन किसी एक दिन में सम्भव नहीं है। उसे बोली से भाषा के रूप में परिवर्तित होने के लिये हजारों युगों की यात्रा तय करनी होती है।

संदर्भ

1. डॉ. रामस्वरूप श्रीवास्तव 'स्नेही' : बुंदेली लोकसाहित्य पृ. 1
2. हिन्दी साहित्य सम्मेलन : बुंदेली और उसके क्षेत्रीय रूप, प्रथम संस्करण, पृ. 2
3. गौरी शंकर द्विवेदी : बुंदेली वैभव, प्रथम भाग पृ. 52
4. डॉ. महेन्द्र वर्मा : बुंदेलखण्ड के मूर्तशिल्प, पृ. 23
5. प्रो. नर्मदा प्रसाद गुप्त : बुंदेली लोकसाहित्य परम्परा और इतिहास पृ. 60
6. डॉ. रामस्वरूप श्रीवास्तव 'स्नेही' – बुंदेली लोक साहित्य पृ. 1
7. वही, पृ. 17.
8. डॉ. हरदेव बाहरी – हिन्दी उद्‌भव विकास और रूप, 1970 ई. पू. 37
9. युगेश शर्मा, लेख – कपिलदेव तेलंग : बुंदेली के विविध आयाम पृ. 37.
10. डॉ. रामस्वरूप श्रीवास्तव 'स्नेही' बुंदेली लोक साहित्य पृ. 17
11. डॉ. हरदेव बाहरी – हिन्दी उद्‌भव विकास और रूप, 1970 ई. पू. 37
12. डॉ. मनु श्रीवास्तव – बुंदेली काव्यधारा, पृ. 6